अध्याय – 11

वन उत्पादकता संस्थान
रांची

बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूहों के संघ क्षेत्रों के राज्यों की वानिकी अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करने के मुख्य उद्देश्य के साथ, लाख विकास निदेशालय को उच्चीकृत और वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून से अलग करके, वन उत्पादकता संस्थान, रांची की स्थापना 1992 में की गई। वर्ष 1997-98 के दौरान संस्थान के मुख्य कार्यकलापों एवं भ्रमण उपलब्धियों का सारांश नीचे दिया गया है।

1997-98 के दौरान पूरी की गई परियोजनायें

कोई नहीं

1997-98 के दौरान जारी पुरानी परियोजनायें

परियोजना 1 : रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम।

उद्देश्य : निजी और सार्वजनिक दोनों तरह की भूमियों पर वन रोपण की उत्पादकता एवं गुणवत्ता बढ़ाने के लिए रोपण पदार्थो की गुणवत्ता सुधारना।

उपलब्धियां

बहुउद्देशीय वृक्ष प्रजातियों के 50 हैक्टेयर बीज स्टैण्ड की पहचान करके राज्य वन विभाग, पश्चिम बंगाल के सहयोग से उत्तरी बंगाल में रखरखाव किया जा रहा है। बिहार में 50 हैक्टे० बीज उत्पादन क्षेत्र के विकास के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। बहुउद्देशीय वृक्ष प्रजातियों (ऐकेशिया, यूकेलिप्टस, गम्हार और सिस्सू) के बीज आधार और क्लोनीय बीज उद्यान लगाने का काम शुरु किया गया। बांस और पावलोनिया के कायिक प्रवर्धन के लिए संवर्धन बगीचे शुरु किए गए। ऐकेशिया, यूकेलिप्टस, गम्हार और पॉपलर जैसे बहु उद्देशीय वृक्षों के उद्गमस्थल परीक्षण शुरु किए गए।

परियोजना 2 : लाख विकास।

उद्देश्य : लाख उत्पादन पर आंकड़े एकत्र करना तथा लाख खेती भी उन्नत विधियों के लिए प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन करना।

उपलब्धियां

सरकारी विभागों एवं अन्य उपभोक्ता एजेन्सियों के उपयोग के लिए उत्पादन, कीमतों, आन्तरिक खपत, निर्यात, प्रेषण आदि से संबंधित लाख पर सांख्यिकीय आंकड़ो का संग्रहण एवं संकलन किया गया। मासिक लैक न्यूज लैटर्स और वार्षिक लैक बुलेटिन प्रकाशित किए गए।

लाख खेती की वैज्ञानिक एवं उन्नत विधियों के प्रदर्शन एवं उत्पादकों में गुणवत्ता ब्रूड लैक की आपूर्ति करने के लिए बिहार, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा में क्षेत्रीय रूप से स्थित पांच केन्द्रक ब्रूड लैक फार्मों का रखरखाव किया गया। नए लाख परपोषी पादपों, जैसे ऐकेशिया ऑरिकूलिफॉर्मिस, ऐल्बिजिया लूसिडा, ऐल्बिजिया प्रोसेरा, केजेनस केजन और मोघानिया माइक्रोफाइला, पर परीक्षण शुरु किए गए।

परियोजना 3 : पारि-पुनरूद्धार।

उद्देश्य : निम्नीकरण स्थलों का पारि-पुनरूद्धार करना।

उपलब्धियां

निम्न कार्यकलाप किए गए :

(i) खनित भूमियों, समस्याग्रस्त मृदा एवं अन्य दबाव स्थलों में पुनख पुनरवनस्पतिकरण एवं उपयुक्त सुधार पैकेजों के विकास।

(ii) निम्नीकृत एवं दबावग्रस्त स्थल में वानिकी प्रजातियों पर जैवउर्वरक अनुक्रिया पर अध्ययन एवं वानिकी प्रजातियों के लिए एन पी के एवं सूक्ष्म पोषक की मात्राओं का इष्टतमीकरण।

(iii) दार्जिलिंग जिले के बालासोन जलग्रहण में जलविज्ञानीय अध्ययन।

(iv) विभिन्न वानस्पतिक आच्छादन के तहत अन्त: संचरण अध्ययन।

(v) लैटराइटी मृदाओं में रोपण तथा प्राकृतिक पारितंत्रों के अन्तर्गत उत्पादकता, कूडा-करकट अवपातन मौसमीपन, कूडा-करकट अपघटन, पोषक आय व्ययन और पोषक चक्र पर अध्ययन।

परियोजना 4 : सामाजिक आर्थिक पहलू तथा अन्य कार्यकलाप।

उद्देश्य : रोपणों की अर्थव्यवस्था, बाजार अध्ययन एवं रोपण तकनीकें।

उपलब्धियां

यू.एन.डी.पी. के अन्तर्गत रोपणों के आर्थिक पहलुओं का मूल्यांकन करने के लिए प्रदर्शन रोपणों में बहुउद्देशीय वृक्ष प्रजातियों के वृद्धि पैरामीटरों पर समय-समय पर प्रेक्षण लिए गए। दक्षिण बिहार में उपयुक्त कृषिवानिकी मॉडलों के विकास के लिए परीक्षण करने हेतु अध्ययन किए गए। बिहार और पश्चिम बंगाल में प्रकाष्ठ, बांस और अकाष्ठ वन उपज पर बाजार अध्ययन और सांख्यिकीय आंकड़ों का संग्रहण किया गया।

एफ.एस.वी.एस., मिदनापुर में बम्बूसा वल्गेरिस, बम्बूसा, बाल्कुआ, बम्बूसा ट्रूल्डा और बम्बूसा अरुन्डिनेसिया की प्रवर्धन प्रौद्योगिकी विकसित की गई। छोटा नागपुर क्षेत्र के लिए पावलोनिया एवं पॉपलर की पौधशाला तकनीकें विकसित की गई।

1997-98 के दौरान शुरु की गई नयी परियोजनायें

कोई नहीं

विस्तार

विभिन्न क्षेत्रों जैसे पी एस आई पी, लाख और यू.एन.डी.पी, में संस्थान के कार्यकलापों एवं उपलब्धियों पर विडियो फिल्म तैयार की गई। सैन्ट्रल कोल फील्ड्स लिमिटेड की हुरिलांग भूमिगत परियोजना के लिए जैविक पर भूमिगत विस्फोटन के सम्भावित प्रभावों का अध्ययन किया गया। खनित क्षेत्रों के सुधार के लिए सी एम पी डी आई लिमिटेड को परामर्शी सेवाएं उपलब्ध कराई गई।

बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश में लाख खेती की वैज्ञानिक विधियों पर लाख कृषकों एवं वानिकी कार्मियों के लिए अल्प अवधि प्रशिक्षण चलाया गया। बिहार और पश्चिम बंगाल में पौधशाला तकनीकों, रोपण तकनीकों, वन रक्षण, कृषिवानिकी, बहुउद्देशीय वृक्ष प्रजातियों एवं जैव उर्वरक उपयोग पर प्रशिक्षणों, सम्मेलनों तथा कार्यशालाओं एवं क्षेत्र प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।

आपसी सहयोग, समन्वयन एवं सहभाग के साथ कार्य करने के लिए बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (वानिकी) के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण उपलब्ध कराई गई। बीज उत्पादन क्षेत्रों के विकास के लिए बिहार और पश्चिम बंगाल के राज्य वन विभागों के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

गम्हार, बांस, ऑगस्ती, बबूल, कृषिवानिकी, यू.एन.डी.पी. प्रदर्शन रोपण, बांस गरीब का प्रकाष्ठ विषय पर पैम्फलिट, परचों और पुस्तिकाओं के रूप में विस्तार सामग्रियों तैयार करके वितरित की गई। मासिक लैक न्यूज़ लैटर और वार्षिक लैक बुलेटिन प्रकाशित किए गए।

वित्तीय विवरण

क्र०सं०	शीर्ष/परियोजना	व्यय (रुपये लाख में)
(i)	सहायक अनुदान (योजना व गैर-योजना)	85.00 लाख
(ii)	फ्री परियोजना	29.27 लाख
(iii)	यू. एन. डी. पी.	2.06 लाख
	योग	**1,16.33 लाख**